!! ॐ सत्नाम साक्षी !!

कष्ट हरण अष्टक

इस समय कठिन काल में इसका प्रतिदिन पाठ करने से हम सबके कष्ट दूर होंगे- इसके लिए पूर्ण निष्ठा भाव से दृढ़ विश्वास करके इसका नित्य पाठ करें

1. जय गुरुदेवा - अलख अभेवा - अटल अखेवा - सुखधामा।।
   अघ दुःखहारी - नित सुखकारी - मंगलकारी- तव नामा।।
   कष्ट कटीजे - दूख हरीजे - सब सुख कीजे - अभिरामा।।
   हे सर्वेश्वर - हे परमेश्वर- हे जगदीश्वर - सत्कामा।।
   हे सर्वेश्वर - हे परमेश्वर- हे जगदीश्वर - सत्कामा।।
2. भो भगवन्ता - सर्व नियन्ता - मेटहु चिन्ता - भयभारी ।।
   राखहु शरना - अपने चरना - जन्महिं मरना - कट जारी ।।
   दीजै सुमती - हरिए कुमती - निर्मल भक्ति - दे प्यारी।।
   भव जल भारा - आंहिं अपारा - तव आधारा - सद्वारी।।
   भव जल भारा - आंहिं अपारा - तव आधारा - सद्वारी।।
3. सर्वस्वरूपा - अगम अनूपा - अलख अरूपा - गुरुदेवा।।
   तुम पित माता - बंधु भ्राता - दीन त्राता - गुरुदेवा।।
   घट घट वासी - अज अविनाशी - प्रेम प्रकाशी - गुरु देवा ।।
   करहुं जुहारा - बारम्बारा - हो रखवारा - गुरु देवा ।।
   करहुं जुहारा - बारम्बारा - हो रखवारा - गुरु देवा ।।

4. श्री टेऊँरामं – सब सुखधामं – पूरण कामं – नमो नमो ।।
सर्वानंदा – दे आनंदा – सद् बख्शन्दा – नमो नमो।।
शान्तिप्रकाशा – हरहु निराशा – काटहु फासा – नमो नमो ।।
हरि हरिदासा – मेटहु त्रासा – तव भरवासा – नमो नमो ।।
हरि हरिदासा – मेटहु त्रासा – तव भरवासा – नमो नमो ।।

5. सायं वन्दे – प्रातः वन्दे – क्षण क्षण वन्दे – जगत पती।।
निश में वन्दे – दिवसे वन्दे – पल–पल वन्दे – दे सुमती ।।
पुरये वन्दे – पृष्ठे वन्दे – सर्वत वन्दे – प्राणपती।।
पूरब वन्दे – पश्चिम वन्दे – दश दिश वन्दे – सर्व गती।।
पूरब वन्दे – पश्चिम वन्दे – दश दिश वन्दे – सर्व गती।।

6. नमो उदारी – पर उपकारी – कर रखवारी – दूख हरो।।
नमो उदासी – सर्व निवासी – प्रेम प्रकाशी – महर करो।।
नमो निरन्तर – परम स्वतंतर – मम उर अंतर – भक्ति भरो।।
नमो नमामी – अलख अनामी – अंतरयामी – ताप जरो।।
नमो नमामी – अलख अनामी – अंतरयामी – ताप जरो।।

7. नमो कृपाला – नमो दयाला – नमो अकाला – नमो नमो।।
नमो अनूपा – सगुण सरूपा – अगुण अरूपा – नमो नमो।।
नमो विधाता – अभय प्रदाता – सर्व ज्ञाता – नमो नमो।।
नमो अनन्ता – नमो अचिन्ता – तुम बेअन्ता – नमो नमो ।।
नमो अनन्ता – नमो अचिन्ता – तुम बेअन्ता – नमो नमो ।।

8. दैहिक रोगा – मानस शोका – कुमति कुयोगा – हर लीजे।।
जानै निज जन –हरिए अवगुण – मन में सद्गुण– भर दीजे।।
चरण कमल महिं – वृत्ति लगै तहिं – प्रीति घटै नहिं – वर दीजे।।
दूख विशाला – हर प्रतिपाला – पार कृपाला – कर लीजे।।
दूख विशाला – हर प्रतिपाला – पार कृपाला – कर लीजे।।